International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
Volume-1, Issue-1 (June 2014) www.aarf.asia ISSN: (2349-4085)

भिवानी जनपद के साहित्यकारों के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना और नैतिक भावना का वर्णन

Monika Goyal

Lecture in Vaish College of Education, Rohtak

राष्ट्रीय चेतना

राष्ट्र शब्द का अंग्रेजी पर्याय ''नेषन'' है नेषन शबद की उत्पति लेटिन भाषा के शब्द नैषो से हुई है । जिसका अर्थ जन्य या जाति । भारतीय साहित्य में राष्ट्र शब्द का प्रयोग प्राचीन काल से मिलता रहा है।

''जिस प्रदेष के निवासी एक विषिष्ट भाषा के द्वारा विचार विनिमय करते हो वह स्थान विषेष ही राष्ट्र है।''

शब्दकोषानुसार राष्ट्र शब्द का अर्थ है ''वह लोक समुदाय जो एक ही देष में बसता हो तथा एक ही राज्य या शासन में रहता हुआ एकताबद्ध हो ।''

भाषा की समानता, भौगोलिक समीपता सामान्य आर्थिक बन्धन तथा सामान्य इतिहास एवं परम्पराएं आदि वस्तुपरक तत्व है जो राष्ट्र को निर्माण में सहयोगी है।

राष्ट्रीयता

राष्ट्र के प्रति भावना ही राष्ट्रीयता है ं यह एक अनुभूति है जिसके कारण वह अपने राष्ट्र के प्रति विषेष लगाव रखता है । और राष्ट्र की उन्नति एवम् समृद्धि के लिए प्रयासरत रहता है । इसी भावना से अभिभूत होकर देषवासी अपने राष्ट्रहित के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने अपना जीवन तक बलिदान कर देने में गौरव समझता है । राष्ट्र के प्रति लोगों में अपनत्व और ममत्व के भाव को राष्ट्रीयता कहा जाता है ।

भौगोलिक एकता, भाषा, धर्म, संस्कृति और राजनैतिक एकत्व भाव से देष के निवासियों में जो रागात्मक अनुभुति होती है उसे राष्ट्रीयता कहा जाता है । यह एक प्रकार का आन्दोलन है जो विषेषतः ऐसे समय में दिखाई देता है जब देष पर बाह्य आक्रमण हावी हो रहे हो या अन्य कोई आकस्मिक आपदा हो । इसी भावना से प्रेरित होकर संकटकालीन स्थिति में नागरिक स्वयं मर मिटने के लिए कटिबद्ध हो जाता है । जनमानस से सहयोग प्राप्त करने हेतु राष्ट्रीयता की भावना जागृत करना अभिष्ट होता है। इस हेतु की प्राप्ति के लिए देष के गौरवाषाली इतिहास का पुनराख्यान गरिमामयी सभ्यता और संस्कृति का गुणगान किया जाता है ।

आजादी से पूर्व हमारे देष में भी कुषल नेतृत्व के द्वारा लोगों में स्वतन्त्रता प्राप्ति की भावना बलवती इन्ही तत्वों के द्वारा की गई थी ।

राष्ट्रीयता की यह भावना उस काल में इतनी बलवती हो गई कि देष की खातिर देषवासियों ने लाठियों और गोलियों की मार को भी सहा और हॅसते–हॅसते फॅासी पर झूल गए ।

''एक सम्मिलित राजनैतिक ध्येय में बॅधे हुए किसी विषेष भौगोलिक ईकाई के जनसमुदाय के पारस्परिक सहयोग और उन्नति की अभिलाषा से प्रेरित उस भू–भाग के लिए प्रेम और गर्व की भावना को राष्ट्रीयता कहते हैं ।''[1]

देश का गौरवगान

साहित्यकार अति संवेदनषील और सहृद्य होते है । उनका हृद्य भारत के कण कण में रमा है । उन्होंने अपने साहित्य में इसकी महिमा का गुणगान किया है । उनके हृद्य में राष्ट्रभूमि के साथ साथ जन मानस के प्रति भी अटूट प्रेम भाव है । वे देष की भूमि, पर्वत, नदियों, कुसुम–कानन, खग–वृन्द सभी से अनुराग रखते है वे अपनी मातृभूमि को देव–रूप प्रदान करते है ।''

हे प्रकाष पथ के अनुगामी
उज्जवल गाथाओं के स्वामी
जन–गण मन के प्यारे हो ।
जय हो देष हमारे जय हो ।[2]

कवि हिमालय को एक पर्वत न मानकर भारत–भू का उन्नत ललाट मानता है जो कभी झुक नहीं सकता । कवि चाहता है कि उसके देष की सभी विषमताएॅ समाप्त हो जाए ––

ऑगन ऑगन फागुन सावन, ऐसा मेरा देष हो ।
मंदिर मस्जिद में अपनापन, ऐसा मेरा देष हो ।
निर्धनता का अभिषाप मिटे , उॅच नीच का भेदभाव मिटे
लोगों के दिल से पाप मिटे, भय से ना अपने आप मिटे ।
रवि शषि तारों का अनुषासन ऐसा मेरा देष हो ।[3]

भारत भू के चरणों में फैला अनन्त सागर, शट्,ऋतुएं बिस्तृत पवर्वत मालाएॅ, हरितिमा से युक्त सतलुज गंगा का मैदान, असंख्य सरिताएॅ, शस्य श्यामल अन्नपूर्णा माटी कवि को इसे स्वर्ग भू पुकारने के लिए प्रेरित करने वाले धटक है ।

कवि इसकी रक्षा में प्राणों की बाजी लगा देना चाहता है । कवि कथनानुसार

मंजिल पर हम बढ़ते जाए, रूकना कभी न जाने
बाधाओं से ड़र कर पीछे हटना कभी न जाने
निज स्वार्थ में द्रोह देष से करना कभी न जाने[4]

भारतीय संस्कृति के अतीत का गुणगान करके इसे पुनः स्थापित करने का प्रयास यहॉ से साहित्य कारों द्वारा सफल प्रतीत होता है । कवि स्वयं ही यह कार्य नहीं करता अपितु अन्य सृजन धर्मियों से भी समकृत्य हेतु आह्वान करता है ।

बालक और राष्ट्रीयता

आज के बालक भविष्य निर्माता और आगत के कर्णधार हे । बाल मन सरल होता है ॱ अपने परिवेष से, अध्ययन सामग्री से उनके हृद्य में नवीन संकल्पनाओं का निर्माण होता है । यदि इसी आयु में राष्ट्रीयता के बीज रोपित कर दिए जाए तो बाद में पल्लवित होकर राष्ट्र में अपना प्रभाव दिखाते है । राष्ट्र के निर्माण के लिए सुदृढ़ और निर्भीक व्यक्तित्व वाले युवाओं की आवष्यकता होती है । यह तभी संभव है जब हम बालकों के समुचित विकास पर ध्यान दें यदि बालक के मनमें कुठांए घर

कर जाएगी है तो उनका व्यक्तित्व दुर्बल हो जाएगा अतः बालक को राष्ट्रीय भावना से युक्त सामाजिक परिवेष प्रदान करना चाहिए ।

यहॉ के साहित्थ्यकार केवल युवाओं का आह्वान करके वर्तमान को ही उज्जवल करना नहीं चाहते अपितु बालकों का आत्मविष्वास जागृत कर भविष्य को भी स्वर्णिम बनाना चाहते है । वे गौरवषाली बलिदानों के इतिहास से बच्चों को अवगत कराते है ।

हमारा धर्म है हम धर्म पे जो लुटायेगें
अगर गोली लगी तो वार सीने पे खायेंगें ।
शपथ है हमें मॉ के दूध की और ठोकते सीना
कदम बढ़ गए है आगे न अब पीछे हटाऐंगे।[5]

नैतिकता की भावना

मनुष्य को समाज में रहते हुए विभिन्न जीवनमूल्यों, रीतियों को अनुालना करनी पड़ती है । नैतिकता भी इन्हीं जीवन मूल्यों का एक घटक है जीवन के समुचित विकास के लिए नैतिकता आवष्यक है ।

मानवता की राह चले सब
धर्म कर्म पे ध्यान धरे सब
प्रेम, प्यार से गले मिले सब
एक दूजे का मान करे सब[6]

वर्तमान समाज में भौतिकवादिता और अर्थ लोलुपता के कारण नैतिकता अपना प्रभाव खो रही है । मनुष्य भौतिक उत्थान के लिए तो प्रयासरत है लेकिन नैतिक मूल्यों की अनुपालना में स्वयं को असमर्थ अनुभव कर रहा है । इसी उद्देष्य की प्राप्ति हेतु साहित्यकार वर्ग प्रयासरत है । भिवानी जनपद के साहित्यकार पौराणिक प्रतीकों के माध्यम से नैतिक आचरण का उत्कर्ष प्रतिमान प्रस्तुत करते है। सदाचार के बिना नैतिकता की कल्पना भी नहीं की जा सकती इसे धारण करके व्यक्ति शान्ति दूत कहलाता है ।

प्रेम अहिंसा, सहिष्णुता, सदाचार सहयोग
शन्ति के ये दूत सभी कहते है सब लोग[7]

व्यक्ति की पहचान उसकी शारिरिक क्षमता, आर्थिक सम्पन्नता, बुद्धि कौषल की अपेक्षा च.ारित्रिक बल से की जानी चाहिए ! यदि नैतिक रूप से नागरिक सबल होगे तो वह प्रान्त और राष्ट्र अपने आप ही समृद्ध हो जाएगा । लेकिन वास्तविकता धरातल पर बिल्कुल विपरीत है लोग नैतिकता छोड़कर स्वार्थपरक आचरण कर रहे है कवि के शब्दों में

नैतिकता ना जाने कोई, मतलब का व्यवहार करे ।
झुक कर रहने वाले का आप जग जीना दुष्वार करे ।।[8]
भिवानी के साहित्य में नैतिकता का अनुषीलन निम्न बिन्दुओं से करेंगे ।

1. **प्रेम ——**

साहित्यकार का प्रेम दैहिक आकर्षण बन्धनों से उपरत प्रतीत होता है । मानसिक आकर्षण और समन्वय को कवि अधिक विस्तार प्रदान करता है ·

धृणा न कर किसी से, तू सबसे प्रेम कर

नरक में डाल देती है नफरत कभी कभी
ठुकरा न अंहकार से तू प्रेम किसी का
मिलती है जिन्दगी में मोहब्बत कभी कभी

यहॉ के कवि वासना की अपेक्षा भावना को प्राथमिकता प्रदान करते है । वह प्रकृति औरे जन्मभूमि से अटूट प्रेम करता है श्री दीक्षित के शब्दों में ——

मातृभूमि हमसे निस्वार्थ प्रेम करती है । पति पत्नि के सम्बन्धों को यहॉ के साहित्यकार मानवनिर्मित न मानकर ईष्वर प्रदत मानते है ।

पति पत्नि के सम्बन्धों को यहॉ के साहित्यकार मानवनिर्मित न मानकर ईष्वर प्रदत मानते है ।

पति पत्नि जोडियॉ जोड़े है भगवान
हो जाते दो अजनबी, दो शरीर एक प्राण
डा0 मनोज भारत के शब्दों में

प्रेम सदा है पूर्ण समर्पण लेन देन का गणित नहीं है, हानि लाभ की जो सोचे इस पथ का वह पथिक नही है। साहित्य की दृष्टि में मानसिक प्रेम दैहिक से अधिक श्रेयस्कर व पवित्र है ।

दान

निर्धन असहाय के सहयोग हेतु नैतिकता में दान का विषिष्ट महत्व है । साहित्य जगत में सत् भाव से ही दानकर्ता और प्राप्त करने वाले को श्रेष्ठ माना गया हे । दानवीर कर्ण का नाम आए बिना दान की महिमा का वर्णन कैसे पूरा हो सकता है ।

दान षिरोमणी भट जगमानी
जिसका दूसरा नहीं कोई सानी
जो होवे तो एसा होवे तू
कुंती के कर्ण सम हो गया[9]

आसक्त औॅर अर्थलोलुप व्यक्ति कभी दानी नहीं बन सकता । परहित के लिए अस्थिदान का उदाहरण भी मिलता है ।

अस्थियॉ दान की उच्च दानी भये
तब सूरों ने किए शस्त्र निर्मित नए[10]

आज स्वार्थ के वषीभूत होकर लोग अर्थ संचय में लगे है । जो व्यक्ति दान नहीं करता उसे सुख सम्पति प्राप्त नहीं होती ।

निर्मूल्य है जीवन दान बिना, सद्ज्ञान बिना
आचार बिना जीवन भी कहो क्या जीवन है, संसार में पर उपकार बिना।[11]

दया

दया मानव के सद्गुणों को अलंकृत करने वाला आभूषण हे दयाहीनता मनुष्य को क्रुर और आततायी के रूप में परिवर्तित कर देती हे । दीन, हीन, दुखी, शोषित व्यक्तिों की सेवा करना दया भाव के प्रमुख प्रतिफल मान जाते है कवि का मन दया भाव से युक्त होकर दुखी, अभावग्रस्त, पीडित और शोषित को आश्रय देकर उनका सहयोग व सेवा करने को श्रेयकर मानता है ।

दया प्रेम ही होत है, धर्म कर्म का मूल
सींचत रहिए मूल को, खिले धर्म के फूल[12]

4. **अहिसा**

हम भारतीय अहिसा परमों धर्मः सिद्धान्त की अनुपालना करते है । साहित्यकार केवल कर्म से ही नहीं अपितु मन और वाणी से भी अहिंसक होने को अहिंसा मानते है । हिंसात्मक प्रवृतियों को यदि जड़ से मिटा दिया जाए तभी अहिसक समाज की स्थापना हो सकती हे । कवि प्रेम के द्वारा अहिसा का प्रचार और हिंसा को समाप्त करना चाहता है

बुरे विचार, उतावलापन हिंसा है, झूठ बोलना हिंसा है
द्वेष हिंसा है,, किसी का बुरा चाहना हिंसा है, संग्रह करना हिंसा है।[13]

5. **सत्संगति –**

सत्संगति का अर्थ है सत्य से युक्त सम्बन्ध या साथ से है वर्तमान में सभी आचारण और सम्बन्ध भौतिकता से प्रभावित होकर स्वार्थ केन्द्रित हो गए है । यदि व्यक्ति सुखमय जीवन जीना चाहता है तो उसे सत्संगति ही करनी पड़ेगी यदि व्यक्ति बुरी संगत में रहता है तो वह भले ही कितना अच्छा हो संसार उसे बुरा ही समझेगा ।

सिर पर गगरी दूध की लेकर चले कलाल
पय को मय समझे सभी, संगत करे कमाल
सुसंगत से जीवन का, होता है उद्धार
सुख शान्ति भरपूर रहे, घर बनता हरिद्वार[14]

6. **सत्यता**

सत्य से बड़ा कोई धर्म और पुण्य नहीं है अन्याय, शोषण के विरूद्ध सभी संकटों को सहते हुए भी साहित्यकार दृढ़ प्रतिज्ञ है कि वह सत्य का ही पक्ष लेगा और असत्य को धारण नहीं करेगा ।

तनिक समय तक सच्चाई को झूठ दबा बेषक लेती
जीत अन्त में सत्य की होती, अगर कोई डटना जाने।[15]

सत्यता सदा व्यवहार में प्रयोग तथा अनुकरण का गुण है । सत्य द्वारा यदि आपसी विद्वेष को समाप्त कर सके तो सत्य हमारे लिए अधिक उपयोगी हे ।

यहां के साहित्यकार आस्तिक विचारक व आस्थावादी हे उनके मन में मानव के चारित्रिक विकास की असीम संभावनाओं के प्रति अटूट विष्वास है वे नैतिकता के अन्य रूपों जैसे अपरिग्रह, निन्दा त्याग, क्रोध त्याग, क्षमा, अभिमान हीनता, परोपकार, सन्तोष आदि को भी स्वीकार्य मानते है तन मन और अर्थ की सुचिता भी यहॉ के साहित्यकारों का वर्ण्य विषय रहा है ।

इज्जत माटी में मिले, धन को लागे आंच
टूम ठेकरी सब बिकै, करे गरीबी नांच[16]

सन्दर्भ संकेत

1. गुलाबराय, राष्ट्रीयता – पृ0 2
2. डा0 रमाकान्त शर्मा, गीत अगीत पृ0 17
3. श्री निवास मयंक,आस के पंख पृ0 35
4. त्क्ष्मीनारायण लक्ष्मी, गुलदस्ता पृ0 52
5. श्री कृष्ण गोतान मंजर, ख्याल मंजूषा पृ0 75
6. लक्ष्मीनारायण लक्ष्मी, ये फूल किसी नजर करूँ पृ0 47
7. लक्ष्मीनारायण लक्ष्मी, इन्द्रधनुषी सतसई पृ0 41
8. लक्ष्मी नारायण लक्ष्मी, गुलदस्ता पृ0 39
9. अम्बा सहाय, अम्बा मुक्तावली पृ0 23
10. श्री निवास मयंक, आस के पंख पृ0 69
11. श्री कृष्ण गोतान मंजर, ख्याल मंजषा पृ0 33
12. लक्ष्मीनारायण लक्ष्मी, इन्द्रधनुषी सतसई पृ0 22
13. रमाकान्त दीक्षित, भाावना के पहिए पृ0 28
14. लक्ष्मीनारायण लक्ष्मी, इन्द्रधनुषी सतसई पृ0 40
15. लक्ष्मीनारायण लक्ष्मी, गुलदस्ता पृ0 48
16. लक्ष्मी नारायण लक्ष्मी, इन्द्रधनुषी सतसई पृ0 70